NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

जौ के प्रमुख कीट एवं उनका नियन्त्रण

डा0 कौशल किशोर, डा0 डी0आर सिंह, डॉ0 राहुल कुमार

परिचय–

जौ की खेती लगभग सभी स्थानों पर की जाती है। इस की फसल बुवाई से कटाई तक विभिन्न कीट से क्षतिग्रस्त होती रहती है। जिससे फसल की पैदावार में कमी आ जाती है। जौ की खेती को हानि पहुँचाने वाले प्रमुख कीट निम्न है :'–

1. **कटुआ कीट : –** इस कीट के प्रौढ गहरे भूरे रंग के 25 मिली मीटर के होते है। मादा कीट अपने अण्डे भूमि में देती है। अण्डों में गिडार निकलकर भूमि पर पड़ी पत्तियों पर रहती है। गिडार पौधों की जड़ों को भूमि की सतह से काट देती है। जिसके फलस्वरूप पौधे सूख जाते है दिन के समय से गिडारे भूमि के दरारों एवं पत्तियों में छिप जाती है। रात में दरारों से निकल कर फलस को हानि पहुँचाती है।

नियन्त्रण :–

1. भूमि में बुवाई से पूर्व अन्तिम जुताई पर क्लोर फायरीफास, धूल 1.5 प्रतिशत या हेप्टाक्लोर धूल, 25–30 किग्राम प्रति हे0 की दर बुरकाव करके मिला देना चाहिए।

2. भूमि में बोने से पूर्व अन्तिम जुताई पर फोरेट 10 जी, 10 किग्रा पर इन्डोसल्फान 4 जी 15 किग्रा अथवा सेवीडाल दानेदार 20–25 किग्राम प्रति हे0 की दर से मिट्टी में मिला देना चाहिए।

2- **गुजिया कीट :–** इस कीट के प्रौढ भूरे रंग के होते है। जिनकी लम्बाई 4 से 5 मिली मीटर तथा चौड़ाई 2 मिली मीटर होती है। मादा कीट अण्डे भूमि में देती है। गिडार व व्यूपा की अवस्थाये भूमि में ही व्यतीत होती है। गुजिया कीट का प्रकोप असिचित क्षेत्रों में अधिक होती है।

डा0 कौशल किशोर, डा0 डी0आर सिंह, डॉ0 राहुल कुमार
कीट विज्ञानं विभाग
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय बाँदा (उ0प्र0)–210001

3. इस कीट की प्रौढ व सूड़ी छोटे पौधों को भूमि की सतह से काटकर क्षतिग्रस्त करते है। जिससे पौधे सूख जाते है। तीन चार सप्ताह के बाद पौधों इस कीट से क्षतिग्रस्त नहीं होते है। अधिक प्रकोप होने पर कभी–कभी फलस की दुबारा बुवाई भी करनी पड़ती है।

गुजिया कीट

नियन्त्रण :– कटुआ की की तरह!

4. **दीमक :–** दीमक कीट से असिंचित क्षेत्रों में जो भी फलस को अधिक क्षति होती है। मुख्यतः दीमक जो लगभग 6 मिली मीटर लम्बे मटमैले सफेद रंग के मुलायम बहुभक्षी कीड़े होते है। दीमक कीट फसल की छोटी अवस्था (सीडलिंग) से फसल पकने तक हानि पहुँचाता है यह कीट भूमि की सतह से कुछ नीचे पौधों को काटकर क्षतिग्रस्त करते है जिससे पूरा पौधा सूख जाता है। अधिक प्रकोप होने पर कभी–कभी फसल की दुबारा बुवाई भी करनी पड़ती है।

दीमक

नियन्त्रण :–

1. भूमि में बुवाई में पूर्व अंतिम जुताई के समय लिण्डेनधूल 1.3 प्रतिशत या क्लोरापाइरीफास धूल 1.5 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुलकर मिला देना चाहिये।
2. खड़ी फसल में कीट का प्रकोप होने पर इण्डोसलफान ई0सी0 2.5 लीटर या क्वीनलफास 25ई0सी0 3.75 ली0, 5 लीटर पानी के साथ उसे प्रति हे0 की दर से 50 किग्राम मिट्टी में मिलाकर खेत में बिखेर देना चाहिये। पुनः हल्की सिंचाई कर देना चाहिए।
3. बुवाई के एक दिन पूर्व क्लोरापाइरीफास 20 ई0सी0, 400 मिली ली या मोनोक्रोयेटोफास कीट नाशी की यह मात्रा 5 लीटर पानी में घोलकर बीजों पर छिड़कर देना चाहिए तथा उनमें भली–भांति मिला देना चाहिये।

4. गेहूँ **तना मक्खी :–** इस कीट के प्रौढ़ छोटे होते है। मादा कीटर अण्डे भूमि के पास तने पर तथा कभी–कभी पत्तियों के निचली सतह पर देती है जिससे 2–3 दिन में सूड़ी निकल आती है। सूड़ी पत्तियों के निचले भाग में तना में प्रवेश कर पौधे के अन्दर के भाग को खाकर क्षतिग्रस्त कर देते है। इसका प्रकोप लगभग 8 सप्ताह की फसल तक की सीमित होता है। देर से बोयी जाने वाली फसल ही इस कीट से अधिक क्षतिग्रस्त होती है।

तना मक्खी

नियन्त्रण :–

1. बुवाई के पूर्व भूमि में फोरेट 10 जी 15 किग्रा प्रति हे0 की दर से भूमि में मिला देना चाहिये।
2. अंकुरण के 4 दिन बाद मोनोक्रोटोफास 40 ई0सी0, 750 मिली ली0 या फास्फामीडार 85 ई0सी0, 250 मिली ली0 प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये।

5. **गुलाबी तना भेदक कीट :–** इस कीट के गिडार तने में प्रवेश करके सभी आन्तरिक भाग को खाते रहती है। जिससे पौधे का मुख्य तना सूख जाता है। जिससे ''हेडहर्ट'' कहते है। मादा पतंगी अण्डे पत्तियों को निचली सतह व तने पर देती है। अण्डे छोटे, गोले व सफेद रंग के होते है। जो बाद में गुलाबी रंग के हो जाते है। पूर्ण व्यस्क गिडार गुलाबी रंग की व लगभग 1.4 सेमी0 लम्बी होती है। प्यूपा तने के अन्दर ही रहता है। सम्पूर्ण जीवन चक्र 6–7 सप्ताह में पूर्ण हो जाता है। इस कीट को पतंगों लगभग 12 मि0 लीटर लम्बे व भूरे रंग होते है।

तना भेदक

नियन्त्रण :– फसल में जब इस कीट का प्रकोप थोड़ा सा प्रतीत हो तभी निम्नलिखित में से किसी एक कीटनाशी का छिड़काव कर देना चाहिए।

1. फासफामिडन 85 ई0सी0, 250 मिली0 प्रति हे0 की दर से।
2. मोनोक्रोटोफास 40 ईसी0, 750 मिली0 प्रति हे0 की दर से।
3. क्विनलफास 25 ई0सी0 व 1.25 ली प्रति हे0 की दर से।
4. मिथाइलाडिमैआन 25 ई0सी0, लीटर प्रति हे0 की दर से।

6. माहूँ कीट :– जौ की फसल पर माहूँ कीट प्रकोप जनवरी के द्वितीय सत्ताह से मार्च के द्वितीय सप्ताह तक होती है।

जौ की फसल पर माहूँ कीट का प्रकोप होने पर पैदावार में कमी आ जाती है। माहूँ छोटा, कोमल शरीर वाला हरे मटमैले, भूरे रंग का कीट है जिसके झुण्ड पत्तियों झूलों, डण्ठलों तथा पौधे के अन्य कोमल भागों पर चिपके रहते है। एक राय चूसकर हानि पहुंचाते है।

माहूँ कीट

नियन्त्रण :– निम्नलिखित एक कीट नाशक रसायन की संस्तुति मात्रा 600–800 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिए। तथा आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन के अन्दर पर पुनः प्रयोग करना चाहिये। माहूँ का प्रकोप यदि अधिक हो तभी कीटनाशी का प्रयोग करें अन्यथा माहूँ का मित्र कीटों द्वारा स्वयं जैविक नियन्त्रण हो जाता है।

1. फास्फोमिडान 85 ई0सी0, 250मि0ली प्रति हे0 की दर से
2. मिथाइल डियेटान 25 ई0सी0, 1 लीटर प्रति हे0 की दर से
3. थायोमिटान 25 ई0सी0, 1 लीटर प्रति हे0 की दर से
4. क्लोर पाइरीफास 20 ई0सी0, 1 ली0 प्रति हे0 की दर से

7. सैनिक कीट :– सैनिक कीट का प्रकोप फसल पर कभी–कभी होता है। इससे फसल को बहुत ही हानि होती है। प्रायः इसका प्रकोप फसल पकने के कुछ समय पूर्व होता है। इस कीट के गिहार पत्तियों को खाती है। यह प्रायः दिन में मिट्ठी के ढेलों व दरारों में रहती है। यह रात को झुंड में निकल कर तना तथा बालियों को काटकर क्षतिग्रसत कर देती है।

नियन्त्रण : फसल पर कीट का प्रकोप होने पर निम्नलिखित में से किसी एक कीटनामी रसायन को 700 ली0 पानी में मिलाकर प्रति

हे0 की दर से छिड़काव/बुरकाव करना चाहिये।

1. मिथाईलाशथियान 2 प्रतिशत धूल 25 किग्रा0 की दर से
2. क्लीनल फास 25 ई0सी0 1.5 ली0
3. क्लोरपाडरीफास 25 ई0सी0 1.0 ली0

सैनिक कीट

8. खेत के चूहे :– कीटों के अतिरिक्त चूहे भी जौ की फसल को बहुत ही क्षति पहुँचाते है। चूहे अपने भविष्य हेतु अन्न का भण्डारण भी करते है। चूहे प्रायः खाद्य पदार्थो को काटकर खाते है। चूहों को सूंघने, स्वास एवं सूनने की बहुत अधिक शक्ति होती है। खेत में चूहे खड़ी फसल, फलदान वृक्ष एवं शाक – भाजियों को हानि पहुँचाते है। उत्तर प्रदेश में मुख्यतः बेन्डीकोटा चूहा पाये जाते है। एक चूहा एक दिन में 10–60 ग्राम अन्न खाता है। भारत में कृषि योग्य भूमि में औसतन 35 चूहे प्रति हे0 पाये जाते है। चूहे वर्ष में दो बार बच्चे पैदा करते है और प्रत्येक बार एक जोड़ा चूहा 7–10 बच्चे पैदा करता है।

नियन्त्रण :–

प्रथम व द्वितीय दिवस : बिना विष मिले चारे का प्रयोग करना चाहिये।

तृतीय दिवस : विषाक्त चारे का प्रयोग करना चाहिए।

चतुर्थ दिवस :– विषाक्त चारे के प्रयोग हेतु समस्त क्षेत्र का निरीक्षण मृतक चूहों का संलकन एवं उन्हें गड्ड़े में दबा देना चाहिये। यदि आवश्रूकता हो तो विषाक्त चारे का पुनः प्रयोग करना चाहिये।

पंचम दिवस :– सम्पूर्ण क्षेत्र का पुनः निरीक्षण और यदि आवश्यकता हो तो विषाक्त चारे के प्रयोग के बाद समस्त खुले निकास द्वारों में प्रधूमव अल्यूमिनियम फासफाइड 3 ग्राम की 1/4 गोली का 0.6 ग्राम की टिकिया चूहों के बिलों में डाकरकर बन्द कर देना चाहिए।

षष्टम दिवसः यदि इसके पश्चात कुछ बिल खुले रहे जाये तो संस्तुत विरोध रसायनों का प्रयोग करना चाहिए।

विषाक्त चारे :–

1. जिंक फास्फाइड 1 भाग आवश्यकतानुसार भोजन पदार्थ 49 भाग
2. वारफेरीन 1 भाग भौज्य पदार्थ 49 भाग वनस्पति तेल आवश्यकतानुसार
3. संस्तुति विरोध रसायन मुराडेन्टनि 1/2 गोली (25 ग्राम) कोल्वीसीन 1 गोली (1मि0ग्रा0) भोज्य पदार्थ 10 ग्राम

नोट : भोज्य पदार्थ गन्ना, ज्वार, बाजरा, चना, लौलिया आदि का प्रयोग करना चाहिए।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE